कहाँ है भगवान ?

सी०पी कुमार
वैज्ञानिक ई
क्षेत्रीय केन्द्र, बेलगाँव

अक्सर लोग पूछते हैं कि भगवान कहाँ है ? बुरे वक्त में मनुष्य संदेह करता है कि क्या भगवान उसकी सहायता कर सकता है । यह एक गूढ़ प्रश्न है । सदियों से मनुष्य भगवान को जानने और पाने का प्रयत्न करता रहा है । आप सबने अपने जीवन में यह अनुभव किया होगा कि जब कभी हम किसी परेशानी और दुविधा में होते हैं तो उन लोगों को याद करते हैं जो हमें सान्त्वना और मार्गदर्शन देते हैं - चाहे वे हमारे माता-पिता हों अथवा मित्र या गुरू । ठीक यही भगवान के बारे में कहा जा सकता है क्योंकि हमें इस स्रोत (भगवान) से एक प्रकार की शान्ति और पवित्र प्रेम मिलने का आभास होता है और हम सहायता के लिये भगवान को याद करते हैं ।

कई लोग यह मानते हैं कि भगवान का अस्तित्व नहीं है । लेकिन इस पृथ्वी पर सब जीवन्त प्राणियों को एक ऊर्जा की आवश्यकता होती है । कोई भी तन्त्र अपने आप नहीं चल सकता । जब हम अपने जीवन में उत्साह एवं मन की शान्ति में रिक्तता का अनुभव करते हैं तो हमें अपनी आन्तरिक बैटरी को पुर्नजीवित करने की आवश्यकता पड़ती है । विज्ञान ऐसी किसी वस्तु में विश्वास नहीं करता जो स्पर्श-गम्य न हो अथवा जिसका भौतिक रूप से परीक्षण न किया जा सके । लेकिन इस जगत में ऐसी बहुत सी प्रक्रियायें हैं जिनका तर्कसंगत विश्लेषण नहीं किया जा सकता - जैसे कि हमारे पारस्परिक सम्बन्ध, विचार, मन के भाव इत्यादि । हम इनका परीक्षण नहीं कर सकते केवल अनुभव कर सकते हैं । इसी प्रकार, भगवान की शक्ति इतनी विलक्षण हैं कि हमें उसे समझने के लिये अपने संकुचित और सीमित ज्ञान के परे प्रयास करना होगा ।

मानव ने भगवान तक पहुँचने के लिये सैकड़ों प्रयास किये हैं । लेकिन यह सुगम नहीं है क्योंकि हम भगवान की उचित व्याख्या से अनभिज्ञ हैं । भगवान के विषय में अनेकों भिन्न विचार धाराओं के कारण मनुष्य असंमंजस में पड़ गया है कि क्या वास्तव में भगवान का अस्तित्व है । लेकिन भगवान को वास्तविक रूप में जानने के लिये हमें उन गुणों पर विचार करना होगा जो कि एक ईश्वरीय सर्वशक्तिमान हस्ती में हो सकते हैं ।

1. व्यापक स्वीकार्यता - जिसकी सब आत्माओं द्वारा पूजा की जाये, जो सब आत्माओं का पिता हो यानि परमपिता ।
२. सुख और दुख के आघातों से अप्रभावित रहे - हमेशा एक परम सुख की अवस्था में ।
३. समय की तीनों अवस्थाओं का ज्ञाता - भूत, वर्तमान एवं भविष्य का ज्ञान हो ।
४. जन्म एवं मृत्यु के चक्र से मुक्त हो ।

५. परहितकारी - भगवान कभी कुछ लेता नहीं है , हमेशा केवल देता है। उसे किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि उसकी कोई देह नहीं है। देह होने पर ही हमें उसके उचित विकास के लिए अनेकों साधनों की आवश्यकता पड़ती है।

६. भगवान तो दैनिक ऊर्जा का एक पृथक विवेक बिन्दु है जिसका एक विशेष घर है इस ब्रहमाण्ड से परे, जहाँ से हम आये हैं। हमारा वास्तविक घर वहीं है। हम आत्मा के रूप में वहॉ थे और इस पृथ्वी पर एक अभिनेता की तरह अपना अभिनय करने आये हैं।

आज मनुष्य आध्यात्मिकता एवं धर्म से विमुख हो रहा है लेकिन यही वे साधन हैं जो हमारी अनन्त काल तक रक्षा कर सकते हैं।